विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार।
कई दृष्टान्त दे दे काढ़े, कर न सके विचार।।७ ।।

माया के संसार में तुम सदा ही जीतने वाले थे। तुम्हें सब तरफ से मान मिलता था। वह सब तुमसे छुड़ा दिया। कई दृष्टान्त दे देकर तुमसे घर छुड़ा दिया और सोचने का मौका नहीं दिया।

मीठी माया वल्लभ जीव की, सो छुड़ायो कुटम परिवार।
बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार।।८ ।।

ईश्वर की प्यारी माया तुम्हारे जीव को लुभा रही थी। ऐसे लुभावने कुटुम्ब, परिवार को मैंने छुड़वा दिया। तुम अपने कुल (परिवार) में पूज्य कहलाते थे और घर, परिवार का बोझ उठाते थे। वह सब छुड़वा दिया।

ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।।९ ।।

घर के ऐसे बड़े-बड़े सुखों का मैं कहां तक वर्णन करूं? मेरी थोड़ी सी वाणी सुनने के बाद यह सुख तुम्हें अग्नि के समान लगने लगे।

ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार।
ठीक काहूं न लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार।।१० ।।

तुम आप बुजरकी की शान-मान में बैठे थे। वह सब मैंने छुड़वा दी। जिसको अपने मूल घर परमधाम की थोड़ी भी पहचान हो गई उसे मेरी वाणी चैन से बैठने नहीं देती।

यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार।।११ ।।

इस तरह से माया के छलों का मैं कितना बयान करूं? मेरा शरीर ही जादू का बना है (कि मैं हूं अक्षरातीत और बैठा हूं एक मनुष्य तन में)। इस माया के जहरीले नशे को मैं इस तरह से झाड़कर उतार देती हूं कि जरा भी माया का जहर बाकी नहीं रहता।

।। प्रकरण ।। १२० ।। चौपाई ।। १७३५ ।।

सिफत तो सारी सब्द में, चौदे तबक के माहें।
कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए।।१ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म की महिमा ग्रन्थों में गाई है, परन्तु कुरान (अल्लाह कलाम) इन सब ग्रन्थों से अलग है। इसकी सिफत इस जबान से कैसे कहूं?

तामें सिफत सोफी महंमद की, याकी गरीब गिरो की सिफत।
सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखिरत।।२ ।।

उसके अन्दर भी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी और उनकी गरीब जमात की शोभा का वर्णन है। श्री प्राणनाथजी ही आखिरी वक्त के खाविंद हैं और यही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे।

सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुले हकीकत।
उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत।।३ ।।

यह वचन कुरान में इशारों में लिखे हैं। उनके भेद खुलने पर हकीकत का पता लगता है। जितनी भी अक्ल दौड़ा लो ऊपर के मायने लेने से भेद नहीं खुलता।

Nijanand App

गोस कुतब पैगंमर, ओलिए अंबिए कई नाम।
ताए कई बिध दई बुजरकियां, साहेब के समान।।४।।

संसार वाले लोगों ने कुरान के ज्ञानी लोगों को, गौस, कुतुब, पैगम्बर, औलिया, अंबिया कई नामों से खुदा के समान ही बताया है और उन्हें इन उपाधियों से सम्मानित किया है।

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम।
अव्वल आखिर दोऊ दीन में, एही बुजरक महंमद नाम।।५।।

यह सारी सिफतें आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की हैं जिन्हें कुरान में "स्याम" करके लिखा है। हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों में इन्हीं आखिरी मुहम्मद इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की साहेबी बताई है।

याही बिध गिरोह की, नाम लिखे अनेक।
जुदे जुदे नामों पर सिफत, पर गिरो एक की एक।।६।।

इसी प्रकार से इनकी जमात के भी अनेक नाम लिखे हैं और जुदा-जुदा नामों से इनकी प्रशंसा की गई है। पर वह प्रशंसनीय जमात केवल ब्रह्मसृष्टि मोमिनों की ही है।

तिनकी भी है तफसीर, सुनियो गिरो मोमिन।
मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन।।७।।

उनका भी ब्यौरा अलग है, इसलिए जो मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) हैं ध्यान देकर सुनो। जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम के दरवाजे खुल गए हैं। अब अपनी सुरता अपने घर परमधाम में लगाना।

गिरो एक बुजरक कही, रूह अल्ला आए तिन पर।
इत जादे पैगंमर दो भए, एक नसली और नजर।।८।।

कुरान में एक नाजी फिरके का ब्यान आया है। रूह अल्लाह उन्हीं के वास्ते आए। उनके नसली (बिहारीजी) और नजरी (मेहराज ठाकुर) दो पैगम्बर हुए।

तिनसे राह जुदी हुई, गिरो दोए हुई झगर।
एक उरझे दीन जहूद के, उतरी किताबें दूजे पर।।९।।

उन दोनों में झगड़ा होने से दो रास्ते बन गए। उनमें से एक बिहारीजी का फिरका हिन्दू धर्म में शोभित हो गया और दूसरे नजरी पुत्र स्वामीजी पर कुलजम सरूप की वाणी आई।

सो भाई न माने किताब को, रोसनाई ढांपे फेर फेर।
तब आया दूजे पर महंमद, सब किताबें ले कर।।१०।।

बिहारीजी उस वाणी को नहीं मानते और बार-बार वाणी को ढांपने का ही प्रयास करते हैं। दूसरे तन मेहेराज ठाकुर के अन्दर सब शास्त्रों को लेकर श्री राजजी महाराज आकर विराजमान हो गए।

एही फिरका नाजी कह्या, दे साहेदी फुरमान।
एक नाजी नारी बहत्तर, एही नाजी की पेहेचान।।११।।

इसी फिरके को नाजी फिरका कहा है जो कुरान के छिपे रहस्य खोलकर गवाहियां देगा। बहत्तर फिरके दोजखी होंगे और एक नाजी फिरका ही कुरान के भेदों को खोलेगा। यही उसकी पहचान होगी।

एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर।
हकीकत मारफत खोल के, जाहेर करी आखिर।।१२।।

इसी को ही खुदा की खास गिरोह कहा गया है जिसमें आखिर में मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी प्रगट हुए और उन्होंने हकीकत और मारफत के दरवाजे खोलकर, कयामत का दिन आ गया है, की सूचना दी।

Nijanand App

जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक।
तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक।। १३ ।।

जब हकीकत और मारफत के भेद खुल गए तो सब धर्म एक हो गए और सबके दिलों के संशय मिट गए तथा जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुरान के गुझ भेद जाहिर हो गए।

एती बातें कुरान में, बिध बिध करी रोसन।
कई नाम धर दई बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन।। १४ ।।

ऐसी कई बातें कुरान में तरह-तरह से लिखी हैं और कई नामों से इमाम मेंहदी और मोमिनों की सिफत का वर्णन है।

कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान।
तीनों अर्स अजीम के, ईसे किए बयान।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखी मोमिन (ब्रह्मसृष्टियों) की सिफत जबान से कही नहीं जाती। इमाम मेंहदी, मोमिन तथा तारतम वाणी तीनों परमधाम के हैं, ऐसा ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी) ने बताया।

।। प्रकरण ।। १२१ ।। चौपाई ।। १७५० ।।

ब्रह्मसृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन।
मोहे स्यामाजीएं यो कह्या, जो आए धाम से आपन।। १ ।।

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में बैठकर सपने का खेल देख रही हैं। श्री श्यामाजी ने आकर मुझसे कहा कि हम परमधाम से आए हैं।

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी।। २ ।।

हम दोनों नसली (बिहारीजी) और नजरी (मेहेराज ठाकुर) श्री देवचन्द्रजी की सन्तान हैं। दोनों आपस में झगड़ कर जुदा हो गए। दुनियां को पारब्रह्म की वाणी का सन्देश देने का एक उद्देश्य था।

तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएं, दूजी बातून मेरे हाथ।। ३ ।।

कई सुन्दरसाथ नसली पुत्र बिहारीजी के साथ और कई मेरे साथ आ गए। जाहिरी गादी चाकला मन्दिर की बिहारीजी को मिली और दूसरी बातूनी गद्दी मुझे दी, अर्थात् रुई की गद्दी बिहारीजी को मिली और श्री राजजी श्री श्यामाजी की बैठक मेरे अन्दर हो गई।

उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महमद का होए।। ४ ।।

परमधाम की वाणी का अवतरण मेरे तन से हुआ जिस को बिहारीजी की जमात नहीं मानती। तब मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) मेरे अन्दर आकर बैठ गए। जैसा रसूल मुहम्मद ने कुरान में कहा था वैसा ही हुआ।

सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख।। ५ ।।

इस हकीकत को कुरान में कई जगह पर गवाहियां देकर लिखा है। यह सब गवाहियां पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने स्वयं कुरान में लिखवाई हैं।

Nijanand App